



भारत के राष्ट्रपति
श्री राम नाथ कोविन्द
का
स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या
पर राष्ट्र के नाम संदेश

मेरे प्यारे देशवासियों,

1. कल हमारी आज़ादी के इकहत्तर वर्ष पूरे हो रहे हैं। कल हम अपनी स्वाधीनता की वर्षगांठ मनाएंगे। राष्ट्र-गौरव के इस अवसर पर, मैं आप सभी देशवासियों को बधाई देता हूँ। 15 अगस्त का दिन, प्रत्येक भारतीय के लिए पवित्र होता है, चाहे वह देश में हो, या विदेश में। इस दिन, हम सब अपना 'राष्ट्र-ध्वज' अपने-अपने घरों, विद्यालयों, कार्यालयों, नगर और ग्राम पंचायतों, सरकारी और निजी भवनों पर उत्साह से फहराते हैं। हमारा 'तिरंगा' हमारे देश की अस्मिता का प्रतीक है। इस दिन, हम देश की संप्रभुता का उत्सव मनाते हैं, और अपने उन पूर्वजों के योगदान को कृतज्ञता से याद करते हैं, जिनके प्रयासों से हमने बहुत कुछ हासिल किया है। यह दिन, राष्ट्र-निर्माण में, उन बाकी बचे कार्यों को पूरा करने के संकल्प का भी दिन है, जिन्हें हमारे प्रतिभाशाली युवा अवश्य ही पूरा करेंगे।
2. सन 1947 में, 14 और 15 अगस्त की मध्य-रात्रि के समय, हमारा देश आज़ाद हुआ था। यह आज़ादी हमारे पूर्वजों और सम्मानित स्वाधीनता सेनानियों के वर्षों के त्याग और वीरता का परिणाम थी। स्वाधीनता संग्राम में संघर्ष करने वाले सभी वीर और वीरांगनाएं, असाधारण रूप से साहसी, और दूर-दृष्टा थे। इस संग्राम में, देश के सभी क्षेत्रों, समाज के सभी वर्गों और समुदायों के लोग शामिल थे। वे चाहते, तो सुविधापूर्ण जीवन जी सकते थे। लेकिन देश के प्रति अपनी अटूट निष्ठा के कारण, उन्होंने ऐसा नहीं किया। वे एक ऐसा स्वाधीन और प्रभुता-सम्पन्न भारत बनाना चाहते थे, जहां समाज में बराबरी और भाई-चारा हो। हम उनके योगदान को हमेशा याद करते हैं। अभी 9 अगस्त

को ही, 'भारत छोड़ो आंदोलन' की 76वीं वर्षगांठ पर, स्वाधीनता सेनानियों को, राष्ट्रपति भवन में सम्मानित किया गया।

3. हम भारतीयशाली हैं कि हमें ऐसे महान् देशभक्तों की विरासत मिली है। उन्होंने हमें एक आज़ाद भारत सौंपा है। साथ ही, उन्होंने कुछ ऐसे काम भी सौंपे हैं, जिन्हें हम सब मिलकर पूरा करेंगे। देश का विकास करने, तथा गरीबी और असमानता से मुक्ति प्राप्त करने के, ये महत्वपूर्ण काम हम सबको करने हैं। इन कार्यों को पूरा करने की दिशा में, हमारे राष्ट्रीय जीवन का हर प्रयास, उन स्वाधीनता सेनानियों के प्रति हमारी श्रद्धांजलि है।
4. यदि हम स्वाधीनता का केवल राजनैतिक अर्थ लेते हैं तो लगेगा कि 15 अगस्त, 1947 के दिन हमारा लक्ष्य पूरा हो चुका था। उस दिन राजसत्ता के खिलाफ संघर्ष में हमें सफलता प्राप्त हुई और हम स्वाधीन हो गए। लेकिन, स्वाधीनता की हमारी अवधारणा बहुत व्यापक है। इसकी कोई बंधी-बंधाई और सीमित परिभाषा नहीं है। स्वाधीनता के दायरे को बढ़ाते रहना, एक निरन्तर प्रयास है। 1947 में राजनैतिक आज़ादी मिलने के, इतने दशक बाद भी, प्रत्येक भारतीय, एक स्वाधीनता सेनानी की तरह ही देश के प्रति अपना योगदान दे सकता है। हमें स्वाधीनता को नए आयाम देने हैं, और ऐसे प्रयास करते रहना है, जिनसे हमारे देश और देशवासियों को विकास के नए-नए अवसर प्राप्त हो सकें।
5. हमारे किसान, उन करोड़ों देशवासियों के लिए अन्न पैदा करते हैं, जिनसे वे कभी आमने-सामने मिले भी नहीं होते। वे, देश के लिए खाद्य सुरक्षा और पौष्टिक आहार उपलब्ध कराके, हमारी आज़ादी को शक्ति प्रदान करते हैं। जब हम उनके खेतों की पैदावार और उनकी आमदनी बढ़ाने के लिए आधुनिक टेक्नॉलॉजी और अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराते हैं, तब हम अपने स्वाधीनता सेनानियों के सपनों का भारत बनाते हैं।
6. हमारे सैनिक, सरहदों पर, बर्फीले पहाड़ों पर, चिलचिलाती धूप में, सागर और आसमान में, पूरी बहादुरी और चौकसी के साथ, देश की सुरक्षा में समर्पित रहते हैं। वे बाहरी खतरों से सुरक्षा करके हमारी स्वाधीनता सुनिश्चित करते हैं। जब हम उनके लिए बेहतर हथियार उपलब्ध कराते हैं, स्वदेश में ही रक्षा उपकरणों के लिए सप्लाई-चेन विकसित करते हैं, और सैनिकों को कल्याणकारी सुविधाएं प्रदान करते हैं, तब हम अपने स्वाधीनता सेनानियों के सपनों का भारत बनाते हैं।
7. हमारी पुलिस और अर्धसैनिक बल अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करते हैं। वे आतंकवाद का मुक़ाबला करते हैं, तथा अपराधों की रोकथाम और कानून-व्यवस्था की रक्षा करते हैं। साथ ही साथ, प्राकृतिक आपदाओं के समय, वे हम सबको सहारा देते हैं। जब हम उनके काम-काज और व्यक्तिगत जीवन में सुधार लाते हैं, तब हम अपने स्वाधीनता सेनानियों के सपनों का भारत बनाते हैं।
8. महिलाओं की, हमारे समाज में, एक विशेष भूमिका है। कई मायनों में, महिलाओं की आज़ादी को व्यापक बनाने में ही देश की आज़ादी की सार्थकता है। यह सार्थकता, घरों में माताओं, बहनों और

बेटियों के रूप में, तथा घर से बाहर अपने निर्णयों के अनुसार जीवन जीने की उनकी स्वतन्त्रता में देखी जा सकती है। उन्हें अपने ढंग से जीने का, तथा अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग करने का सुरक्षित वातावरण तथा अवसर मिलना ही चाहिए। वे अपनी क्षमता का उपयोग चाहे घर की प्रगति में करें, या फिर हमारे work force या उच्च शिक्षा-संस्थानों में महत्वपूर्ण योगदान देकर करें, उन्हें अपने विकल्प चुनने की पूरी आज़ादी होनी चाहिए। एक राष्ट्र और समाज के रूप में हमें यह सुनिश्चित करना है कि महिलाओं को, जीवन में आगे बढ़ने के सभी अधिकार और क्षमताएं सुलभ हों।

9. जब हम, महिलाओं द्वारा चलाए जा रहे उद्यमों या स्टार्ट-अप के लिए आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराते हैं, करोड़ों घरों में एल.पी.जी. कनेक्शन पहुंचाते हैं, और इस प्रकार, महिलाओं का सशक्तीकरण करते हैं, तब हम अपने स्वाधीनता सेनानियों के सपनों का भारत बनाते हैं।
10. हमारे नौजवान, भारत की आशाओं और आकांक्षाओं की बुनियाद हैं। हमारे स्वाधीनता संग्राम में युवाओं और वरिष्ठ-जनों, सभी की सक्रिय भागीदारी थी। लेकिन, उस संग्राम में जोश भरने का काम विशेष रूप से युवा वर्ग ने किया था। स्वाधीनता की चाहत में, भले ही उन्होंने अलग-अलग रास्ते चुने हों, लेकिन वे सभी आज़ाद भारत, बेहतर भारत, तथा समरस भारत के अपने आदर्शों और संकल्पों पर अड़िग रहे।
11. हम अपने युवाओं का कौशल-विकास करते हैं, उन्हें टेक्नॉलॉजी, इंजीनियरिंग और उद्यमिता के लिए, तथा कला और शिल्प के लिए प्रेरित करते हैं। उन्हें संगीत का सृजन करने से लेकर मोबाइल एप्स बनाने के लिए और खेल प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार, जब हम अपने युवाओं की असीम प्रतिभा को उभरने का अवसर प्रदान करते हैं, तब हम अपने स्वाधीनता सेनानियों के सपनों का भारत बनाते हैं।
12. मैंने राष्ट्र-निर्माण के कुछ ही उदाहरण दिए हैं। ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। वास्तव में, वह प्रत्येक भारतीय जो अपना काम निष्ठा व लगन से करता है, जो समाज को नैतिकतापूर्ण योगदान देता है - चाहे वह डॉक्टर हो, नर्स हो, शिक्षक हो, लोक सेवक हो, फैक्ट्री वर्कर हो, व्यापारी हो, बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल करने वाली संतान हो - ये सभी, अपने-अपने ढंग से स्वाधीनता के आदर्शों का पालन करते हैं। ये सभी नागरिक, जो अपने कर्तव्यों और दायित्वों का निर्वाह करते हैं, और अपना वचन निभाते हैं, वे भी स्वाधीनता संग्राम के आदर्शों का पालन करते हैं। मैं कहना चाहूँगा कि हमारे जो देशवासी कतार में खड़े रहकर अपनी बारी का इंतजार करते हैं, और अपने से आगे खड़े लोगों के अधिकारों का सम्मान करते हैं, वे भी हमारे स्वाधीनता सेनानियों के सपनों का भारत बनाते हैं। यह एक बहुत छोटा सा प्रयास है। आइए, कोशिश करें, इसे हम सब अपने जीवन का हिस्सा बनाएँ।

प्यारे देशवासियों,

13. जो कुछ भी मैंने कहा है, क्या वह अब से दस-बीस वर्ष पहले, प्रासंगिक नहीं रहा होगा? कुछ हद तक, निश्चित रूप से यह सब प्रासंगिक रहा होगा। फिर भी, आज हम अपने इतिहास के एक ऐसे मोड़ पर खड़े हैं जो अपने आप में बहुत अलग है। आज हम कई ऐसे लक्ष्यों के काफी क़रीब हैं, जिनके लिए हम वर्षों से प्रयास करते आ रहे हैं। सबके लिए बिजली, खुले में शौच से मुक्ति, सभी बेघरों को घर और अति-निर्धनता को दूर करने के लक्ष्य अब हमारी पहुँच में हैं। आज हम एक ऐसे निर्णायक दौर से गुजर रहे हैं। ऐसे में, हमें इस बात पर जोर देना है कि हम ध्यान भटकाने वाले मुद्दों में न उलझें, और ना ही निर्थक विवादों में पड़कर, अपने लक्ष्यों से हटें।
14. क़रीब तीन दशक बाद, हम सब आज़ादी की सौर्वं वर्षगांठ मनाएंगे। पूरी दुनिया, तेजी से बदल रही है। हमें दुनिया के मुक़ाबले अधिक तेज रफ्तार से, बदलाव और विकास करना होगा। आज जो निर्णय हम ले रहे हैं, जो बुनियाद हम डाल रहे हैं, जो परियोजनाएं हम शुरू कर रहे हैं, जो सामाजिक और आर्थिक पहल हम कर रहे हैं - उन्हीं से यह तय होगा, कि हमारा देश कहाँ तक पहुँचा है। हमारे देश में बदलाव और विकास तेजी से हो रहा है, और इस की सराहना भी हो रही है। हमारे देश में, इस प्रकार के बदलाव हमारी जनता, हमारे प्रबुद्ध नागरिकों और समाज एवं सरकार की साझेदारी से संचालित होते रहे हैं। हमेशा से हमारी सोच यह रही है, कि ऐसे परिवर्तनों से समाज के वंचित वर्ग का और गरीबों का जीवन, बेहतर बने।
15. मैं आपको केवल एक उदाहरण देता हूँ। इस समय ग्राम स्वराज अभियान के तहत सात प्रमुख कार्यक्रमों का लाभ हमारे सर्वाधिक ग़रीब और वंचित नागरिकों तक पहुँचाया जा रहा है। इन सेवाओं में बिजली, बैंकिंग, कल्याणकारी और बीमा कार्यक्रमों के साथ-साथ दुर्गम इलाकों तक टीकाकरण की सुविधा पहुँचाना शामिल है। ग्राम स्वराज अभियान के दायरे में उन 117 आकांक्षी जिलों को भी शामिल कर लिया गया है, जो आज़ादी के सात दशक बाद भी, हमारी विकास यात्रा में पीछे रह गए हैं।
16. इन जिलों की आबादी में, अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लोगों की संख्या अधिक है। हमारे सामने, सामाजिक और आर्थिक पिरामिड में सबसे नीचे रह गए देशवासियों के जीवन-स्तर को तेजी से सुधारने का अच्छा अवसर है। ग्राम स्वराज अभियान का कार्य केवल सरकार द्वारा नहीं किया जा रहा है। यह अभियान, सरकार और समाज के संयुक्त प्रयास से चल रहा है। इन प्रयासों में, ऐसे नागरिक सक्रिय हैं, जो निर्बल वर्गों की कठिनाइयों को कम करने, उनकी तकलीफ बांटने और समाज को कुछ देने के लिए, सदैव तैयार रहते हैं।
17. भारतीय परम्परा में, दरिद्र-नारायण की सेवा को सबसे अच्छा काम कहा गया है। भगवान बुद्ध ने भी कहा था कि 'अभित्वरेत कल्याणे' अर्थात् कल्याणकारी काम, सदैव तत्परता से करना चाहिए। मुझे

विश्वास है कि हम सभी भारतवासी, समाज और देश के कल्याण के लिए, तत्परता के साथ अपना योगदान देते रहेंगे।

प्यारे देशवासियों,

18. स्वाधीनता दिवस का हमेशा ही एक विशेष महत्व होता है। लेकिन इस बार, इस दिवस के साथ एक खास बात जुड़ी हुई है। कुछ ही सप्ताह बाद, 2 अक्टूबर से, महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के समारोह शुरू हो जाएंगे। गांधीजी ने, केवल हमारे स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व ही नहीं किया था, बल्कि वह हमारे नैतिक पथ-प्रदर्शक भी थे, और सदैव रहेंगे। भारत के राष्ट्रपति के रूप में, मुझे अफ्रीका के देशों की यात्रा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। विश्व में, हर जगह, जहां-जहां पर मैं गया, सम्पूर्ण मानवता के आदर्श के रूप में गांधीजी को सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है। उन्हें मूर्तिमान भारत के रूप में देखा जाता है।
19. हमें गांधीजी के विचारों की गहराई को समझने का प्रयास करना होगा। उन्हें राजनीति और स्वाधीनता की सीमित परिभाषाएं, मंजूर नहीं थीं। जब गांधीजी और उनकी पत्नी कस्तूरबा, चंपारन में नील की खेती करने वाले किसानों के आंदोलन के सिलसिले में बिहार गए तो वहाँ उन्होंने काफी समय, वहाँ के लोगों, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों को, स्वच्छता और स्वास्थ्य की शिक्षा देने में लगाया। चंपारन में, और अन्य बहुत से स्थानों पर, गांधी जी ने स्वयं, स्वच्छता अभियान का नेतृत्व किया। उन्होंने साफ-सफाई को, आत्म-अनुशासन और शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक माना।
20. उस समय, बहुत से लोगों ने यह सवाल उठाया था कि इन सब बातों का भला स्वाधीनता संग्राम के साथ क्या लेना-देना है? महात्मा गांधी के लिए, स्वाधीनता के अभियान में, उन बातों का बहुत महत्व था। उनके लिए वह केवल राजनैतिक सत्ता प्राप्त करने का संग्राम नहीं था, बल्कि गरीब से गरीब लोगों को सशक्त बनाने, अनपढ़ लोगों को शिक्षित करने, तथा हर व्यक्ति, परिवार, समूह और गांव के लिए सम्मान के साथ जीवन जीने के अधिकार का संघर्ष था।
21. गांधी जी 'स्वदेशी' पर बहुत ज़ोर दिया करते थे। उनके लिए यह भारतीय प्रतिभा और संवेदनशीलता को बढ़ावा देने का प्रभावी माध्यम था। वे दुनिया के अन्य हिस्सों में प्रचलित चिंतन-धाराओं के बारे में सजग थे। वे यह मानते थे कि, भारतीय सभ्यता के अनुसार, हमें पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर, नए-नए विचारों के लिए, अपने मस्तिष्क की खिड़कियां खुली रखनी चाहिए। यह स्वदेशी की उनकी अपनी सोच थी। दुनिया के साथ हमारे सम्बन्धों को परिभाषित करने में - हमारी अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक आकांक्षाओं और नीतिगत विकल्पों के चयन में - स्वदेशी की यह सोच आज भी प्रासंगिक है।

22. गांधीजी का महानतम संदेश यही था कि हिंसा की अपेक्षा, अहिंसा की शक्ति कहीं अधिक है। प्रहार करने की अपेक्षा, संयम बरतना, कहीं अधिक सराहनीय है तथा हमारे समाज में हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। गांधीजी ने अहिंसा का यह अमोघ अस्त्र हमें प्रदान किया है। उनकी अन्य शिक्षाओं की तरह, अहिंसा का यह मंत्र भी, भारत की प्राचीन परम्परा में मौजूद था, और आज 21वीं सदी में भी, हमारे जीवन में यह उतना ही उपयोगी और प्रासंगिक है।
23. इस स्वाधीनता दिवस के अवसर पर, जो गांधीजी की 150वीं जयंती समारोहों के, इतना करीब है, हम सब भारतवासी अपने दिन-प्रतिदिन के आचरण में, उनके द्वारा सुझाए गए रास्तों पर चलने का संकल्प लें। हमारी स्वाधीनता का उत्सव मनाने, तथा भारतीयता के गौरव को महसूस करने का, इससे बेहतर कोई और तरीका नहीं हो सकता।
24. यह भारतीयता केवल हमारे लिए नहीं है। यह पूरे विश्व को भारतीय सभ्यता की देन है। गांधीजी और भारत की सोच 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की रही है, हम पूरी दुनिया को एक ही परिवार मानते हैं। इसीलिए हमारा ध्यान सदैव विश्व-कल्याण पर होता है, चाहे वह अफ्रीकी देशों की सहायता करना हो, जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर पहल करनी हो, संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों के लिए दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में सेना भेजनी हो, पड़ोसी देशों में प्राकृतिक आपदा के समय मदद पहुंचानी हो, या फिर विश्व में कहीं भी, विषम परिस्थितियों में फंसे भारतवासियों को वहाँ से सुरक्षित निकालने के साथ-साथ, दूसरे देशों के नागरिकों को भी वहाँ से बाहर निकालना हो। गांधीजी और भारत की इसी सोच के अनुसार, हम स्वास्थ्य एवं मानव-कल्याण के लिए योगाभ्यास को, तथा विकास के लिए आधुनिक टेक्नॉलॉजी को, पूरी दुनिया के साथ साझा करते हैं। हम सब गांधीजी की संतान हैं। जब हम एकाकी पथ पर चलते हैं, तब भी हमारी आँखों में पूरी मानवता के कल्याण के सपने होते हैं।

प्यारे देशवासियों,

25. अनेक विश्वविद्यालयों में अपने संवादों के दौरान, मैंने विद्यार्थियों से यह आग्रह किया है कि वे साल में चार या पांच दिन किसी गांव में बिताएं। U.S.R. यानि 'यूनिवर्सिटीज़ सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी' के रूप में किए जाने वाले इस प्रयास से विद्यार्थियों में, अपने देश की वास्तविकताओं के बारे में, जानकारी बढ़ेगी। उन्हें, सामाजिक कल्याण के कार्यक्रमों से जुड़ने और उनमें भाग लेने का अवसर मिलेगा, तथा वे ऐसे कार्यक्रमों के प्रभाव को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे। इस पहल से विद्यार्थियों को भी लाभ होगा और साथ ही साथ ग्रामीण क्षेत्रों को भी मदद मिलेगी। इससे, हमारी आज़ादी के संघर्ष जैसा जोश फिर से पैदा होगा और हर नागरिक को राष्ट्र-निर्माण से जुड़ने की प्रेरणा मिलेगी।
26. अपने देश के युवाओं में आदर्शवाद और उत्साह देखकर मुझे बहुत संतोष का अनुभव होता है। उनमें अपने लिए, अपने परिवार के लिए, समाज के लिए और अपने देश के लिए कुछ-न-कुछ हासिल करने

की भावना दिखाई देती है। नैतिक शिक्षा का इससे बेहतर उदाहरण नहीं हो सकता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री या डिप्लोमा प्राप्त कर लेना ही नहीं है, बल्कि सभी के जीवन को बेहतर बनाने की भावना को जगाना भी है। ऐसी भावना से ही, संवेदनशीलता और बंधुता को बढ़ावा मिलता है। यही भारतीयता है। यही भारत है। यह भारत देश 'हम सब भारत के लोगों' का है, न कि केवल सरकार का।

27. एकजुट होकर, हम 'भारत के लोग' अपने देश के हर नागरिक की मदद कर सकते हैं। एकजुट होकर, हम अपने वनों और प्राकृतिक धरोहरों का संरक्षण कर सकते हैं, हम अपने ग्रामीण और शहरी पर्यावास को नया जीवन दे सकते हैं। हम सब गरीबी, अशिक्षा और असमानता को दूर कर सकते हैं। हम सब मिलकर, ये सभी काम कर सकते हैं, और हमें यह करना ही है। यद्यपि इसमें सरकार की प्रमुख भूमिका होती है, परंतु एकमात्र भूमिका नहीं। आइए, हम अपने प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए सरकार के कार्यक्रमों और परियोजनाओं का पूरा-पूरा उपयोग करें। आइए, देश के काम को अपना काम समझें, यही सोच हमें प्रेरणा देगी।
28. इन्हीं शब्दों के साथ, मैं एक बार फिर आपको, और आपके परिवार के सदस्यों को, स्वाधीनता दिवस की हार्दिक बधाई, और आप सबके स्वर्णिम भविष्य के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद

जय हिन्द !



ADDRESS BY HON'BLE PRESIDENT OF INDIA SHRI RAM NATH KOVIND ON THE EVE OF 72nd INDEPENDENCE DAY OF INDIA

Dear Fellow Citizens

1. My greetings to you as we complete 71 years as an independent nation. Tomorrow we will commemorate our 72nd Independence Day. For every Indian, whether living at home or anywhere else in the world, August 15 is sacred. It is marked on our calendars as a celebration of our sovereignty. We unfurl our national flag with great joy and enthusiasm in workplaces, municipalities, panchayats, colleges, schools, homes and neighborhoods. Our Tricolor is a symbol of our national pride. It is a constant reminder of our striving and our self-belief. It is a day to look back with satisfaction and gratitude for what we have been able to achieve due to the efforts of successive generations of our elders. And it is a day to renew our resolve to fill the gaps that still remain in our nation building project – gaps that our talented young people will no doubt fill.
2. Freedom came to our country on the Midnight of August 14-15, 1947. It was the result of years and decades and centuries of sacrifice and valour on the part of our ancestors and our revered freedom fighters. These were men and women of rare courage and foresight. They came from all regions of the country, all sections of society, all communities and all social and economic groups. They could easily have compromised and settled for some personal benefit, but they did not. Their commitment to India – to a free, sovereign, plural and egalitarian India – was absolute. It was my privilege to honour these freedom fighters on the anniversary of 'Quit India Day' on 9th August in Rashtrapati Bhavan.
3. We are fortunate that we have inherited the legacy of such remarkable patriots. They left us with a free India, but they also left us with unfinished tasks for the development of our society, for the empowerment of the proverbial last person, for their liberation from poverty, and social and economic inequality. Every breath in our collective life as a nation is a tribute to our freedom fighters – and a commitment to accomplish whatever is still unaccomplished.

4. If we define freedom in narrow, political terms, then August 15, 1947, marks a closure. It was the day the political struggle against an imperial power culminated in success and in our Independence Day. But freedom is a broader concept. It is not fixed and finite. Freedom is a constant and relentless endeavour. Even decades after 1947, each one of us can contribute in the manner of a freedom fighter. We can do so if we expand the frontiers of freedom and of opportunity for our fellow Indians and our beloved India.
5. Our farmers grow food for tens of thousands of fellow citizens whom they have not individually met and will never meet. They are upholding our freedom by ensuring food security and nutrition for our children. As we assist our farmers by providing access to technology and other facilities for enhanced productivity and enhanced incomes, we live up to the principles of our freedom struggle.
6. Our Armed Forces stand guard valiantly on our borders, up in the cruel climate of the mountains or under the blazing sun, or in the skies or at sea. They are upholding our freedom by ensuring security from external threats. As we give them better weapons and equipment, build supply chains for such equipment in India itself, or ensure welfare benefits for our soldiers, we live up to the principles of our freedom struggle.
7. Our police and paramilitary forces take on a variety of challenges. In battling terrorism, in fighting crime and law and order disturbances, or even in helping ordinary citizens by holding their hands while they cross a flooded street. In doing this, they are upholding our civic freedom. As we improve their professional and personal conditions, we live up to the principles of our freedom struggle.
8. Women have a special role in our society. The expansion of freedom in our country in many senses amounts to the expansion of freedom for women in our country. This is true whether we see them as mothers, sisters, daughters or simply as women who are entitled to a life of their choosing – and deserving of the opportunity and the security to fulfil their potential. They could do this as sheet-anchors of our families or as absolutely critical entrants to our institutions of higher learning and our workforce. The choice is theirs; as a nation and as a society we must ensure that they have the right and the ability to exercise that choice.
9. As we take this process further, by facilitating credit for women-run enterprises and start-ups or by easier availability of LPG in millions of kitchens and millions of homes, we live up to the principles of our freedom struggle.
10. Our young people, both boys and girls, represent the hope and optimism of India. Our freedom struggle saw the active participation of the young and the old, but its energy was provided by the young. They chose different modes or

activism in their quest for liberty – but their resolve and their idealism, their passion for a free India, for a better India, for a more equal India, was nonnegotiable.

11. Today, as we ignite the fire within our youth, by building capacities for skilling and scholarship; for technology, engineering and entrepreneurship; for creativity and crafts; for playing music and producing mobile apps, for excelling in sports, we are harnessing the unlimited human capital of our youth. In doing so, we live up to the principles of our freedom struggle.
12. I have given only a few examples; there could be many more. The reality is that every Indian who does his or her job with sincerity and commitment, who contributes to society by being true to a professional ethic, be it the doctor's ethic, the nurse's ethic, the teacher's ethic, the public servant's ethic, the factory worker's ethic, the business-person's ethic, the ethic of those who have to care for ageing parents who brought them up with love and sacrifice – each of these and many others are in their own way upholding the values of freedom. They are providing the fruits and goods and services of freedom to fellow citizens. Every citizen of India who does his or her duty sincerely, fulfils a personal and professional obligation and keeps to a given word is, at a fundamental level, upholding the principles of our freedom struggle. I would argue that every Indian who does not jump the queue and respects the civic space and rights of those ahead in the line also lives up to the principles of our freedom struggle. It's a very small gesture. Let us try and abide by it.

Dear Fellow Citizens

13. You may wonder if what I have said so far would not have held true in the years gone by, maybe 10 or 20 years ago or even earlier. To some extent, it certainly would. Even so, we are at a juncture in our history that is very different from any period we have so far experienced. We are at the cusp of achieving many of our long-awaited goals. Universal access to electricity, the elimination of open defecation, the elimination of homelessness, the very elimination of extreme poverty is achievable and attainable. We are at a pivotal moment. Let contentious issues and extraneous debates not distract us.
14. After four years, we will be marking the 75th anniversary of Independence. In less than 30 years, our people will celebrate the 100th anniversary of India as a free nation. The decisions we take today, the foundations we lay today, the projects we undertake today, the social and economic investments we make today – whether for the immediate future or for the medium term – will determine where we stand. The pace of change and development in our country is rapid and appreciable. And as per our civilisational traditions, it is driven by our people, by civil society and by a partnership between citizen and government. Its focus, again in keeping with the essence of Indian thought, is on a better life for the less fortunate.

15. I will give you just one example. The Gram Swaraj Abhiyan is taking seven flagship programmes to the very doorstep of the poorest and the most deprived among our fellow citizens. These services include access to electricity, access to the formal banking system, access to welfare and insurance programmes, and access to immunisation in hitherto hard-to-reach areas. The Gram Swaraj Abhiyan has been extended to 117 Aspirational Districts where, seven decades after Independence, we still have stark gaps in the development narrative.
16. Not surprisingly there is a significant overlap between the populations of these districts and historically weaker communities, such as Scheduled Castes and Scheduled Tribes. As such, we have an opportunity to raise the quality of life for those of our fellow citizens who have unfortunately remained at the bottom of the pyramid. The Gram Swaraj Abhiyan is not being carried out by government alone. It is a collaboration of public agencies and community groups, with selfless citizens who are keen to share, to empathise and to give back.

Dear Fellow Citizens

17. Independence Day is always special, but this year there is an unusual significance attached to it. In a few weeks, on 2nd October, we will begin the commemoration of the 150th birthday of Mahatma Gandhi. Gandhiji did not just lead our freedom struggle. He was and still is our moral compass. In my capacity as the President of India, I have been fortunate to have travelled around the world, particularly to a few countries of Africa. Everywhere, across continents, Gandhiji is mentioned, cherished and remembered as an icon for all humanity. He is the embodiment of India.
18. It is not always simple to understand Gandhiji. He refused to be restricted in his definition of politics and political activism, or even of freedom. When Gandhiji and his wife Kasturba, travelled to Champaran in Bihar for the indigo farmers' agitation, they devoted a considerable part of their time to educating local people, particularly women and children, as well as teaching them about hygiene and health. Here, and on other occasions, Gandhiji personally led the drive for swachhta or cleanliness. He linked the removal of dirt to an act of self-discipline and of promoting physical and mental health.
19. Many were puzzled at that time. What does all this have to do with freedom? For Gandhiji, they were the centre-piece of the quest for freedom. This was a struggle, according to him, not just for political power but for empowering the poorest of the poor, educating the uneducated, ensuring the right to a dignified life and a feasible livelihood for every village, for every neighbourhood, for every family – and for every individual.
20. Gandhiji spoke of swadeshi with an uncommon zeal. To him this was a pride in promoting Indian creativity and an Indian sensibility. Nevertheless, he was alive

to intellectual currents from the rest of the world. He invited these to enrich our learning. To him, Indian civilisation was defined by open windows and not closed doors. This was his concept of swadeshi and it is still relevant to us as we engage with the world – whether for our economy, our health, education and social aspirations, or our policy choices.

21. Perhaps Gandhiji's most noble mantra was to point out that the power of ahinsa is far greater than the power of hinsa. The power to stay your hand is far greater than the power to strike with your hand and hinsa has no place in the society. The weapon of ahinsa was the most effective weapon Gandhiji gave us. Like his other teachings, it was rooted in the ancient wisdom of India and yet has a resonance in the 21st century and in our daily lives.
22. This Independence Day, so close to the 150th anniversary commemoration of Gandhiji, let each of us adapt his ideas and maxims, in whatever manner we can in our everyday work and conduct. I can think of no better way to celebrate our freedom. I can think of no better way to celebrate Indianess.
23. And this Indianess is not for us alone. It is part of what our country and our civilisation bring to the global stage. In the spirit of Gandhiji and the spirit of India, we believe in the age-old ideal of Vasudhaiva Kutumbakam or the “World is one Family”. This is why we demonstrate our concern for entire humanity by providing assistance to many African countries, taking initiatives on the issue of climate change, contributing to United Nations Peacekeeping Operations in different parts of the world, helping neighbouring countries affected by natural disasters, rescuing people from other countries along with our own people, trapped in a conflict zone. In the spirit of Gandhiji and the spirit of India, we share the practice of yoga for health and well-being, and using technology for development. We are Gandhiji's children. We dream for all humanity, even when we walk alone.

Dear Fellow Citizens

24. In my engagements with students and university authorities all over India, I have urged students to spend a few days – maybe four or five days in a year – in a village. Undertaken as part of what may be termed “University Social Responsibility”, this will help students understand our country. It will allow them to observe and participate in social welfare programmes and see how they are making an impact. It will be of benefit to the individual student and to the village, as well as to the country. It will also invoke the fervour of our freedom struggle, and the identification of every citizen with the national mission.
25. I am gratified by the idealism and the passion of our young people. There is a spirit to achieve something for oneself, for one's family, for wider society and for our country. This is the most moral education we can wish for. The outcome of education is not merely a degree or a diploma, but the commitment to help

improve the life of another in a way that is sustainable. This is empathy and fraternity in action. This is the Indian spirit. This is India, because India belongs to the people of India – not just to the Government.

26. Together we can help every citizen in our country. Together we can conserve our forests and natural heritage, we can safeguard our monuments for future generations, we can renew our rural and urban habitats. Together, we can eliminate poverty, illiteracy and inequality. We can and we must do this together. The government has a leading role but not the sole role. Let us use the government's programmes and projects to further our own efforts. Let us make that sense of ownership our motivation.
27. With those words, I once again wish you and your families all the best for Independence Day and best wishes for a bright future.

**Thank you
Jai Hind**